आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य में नव-मानवतावादी दृष्टिकोण

डॉ.बलबीर सिंह

सारांश

संसार में मानव जीवन का मौलिक लक्ष्य अपने जीवन को सार्थक बनाना एवं प्राणी का कल्याण करना है,जिसे प्राप्त करना प्रत्येक विवेकी मानव का प्रयास रहता है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी होने के कारण संपूर्ण सृष्टि में उसे श्रेष्ठ माना जाता है। आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन एवं दृष्टिकोण में मानव विकास एवं कल्याण हेतु दिए गए योगदान के आधार पर आज भी उनका दृष्टिकोण काफी उपयोगी एवं प्रेरणास्पद माना जाता है। उन्होंने न केवल व्यक्ति के आध्यात्मिक उत्थान एवं कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि इस संसार में मानव जीवन को श्रेष्ठ रूप में स्वीकार किया। उनकी मानवतावादी सोच एवं धारणा का अवलोकन अति महत्वपूर्ण है। अहिंसा की नीति को अपनाकर उन्होंने मानव के आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों जीवन पहलुओं को सहज बनाने का योगदान दिया। समाज में अनेक बुराइयां व्याप्त हैं जिनके प्रभाव से मानवतावाद की भावना प्रभावित हो रही है। इन बुराइयों का निराकरण करना चिंतकों, दार्शनिकों एवं समाज सुधारकों का नैतिक दायित्व माना जाता है। इस दिशा में अनेक दार्शनिकों एवं चिंतकों ने प्रयास भी किए हैं और मानवतावाद की भावना की महत्ता को उजागर किया है। आचार्य महाप्रज्ञ भी इस श्रंखला में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है, उनका दृष्टिकोण सतत मानवतावाद के इर्द-गिर्द रहा है। उनके चिंतन एवं विश्लेषण के उन पहलुओं को दृष्टिगोचर करना आवश्यक है जिनसे मानवतावाद का संदेश समाज को रहा है। नैतिकता, कर्तव्य परायणता एवं शासन सत्ता की उत्तरदायित्व भावना श्रेष्ठ जीवन प्रदान करने का मुख्य आधार है। उनके चिंतन में नव-मानवतावादी दृष्टिकोण एवं दर्शन परिलक्षित होता है।

मूल शब्द - मानवतावाद, नव-मानवतावाद, सर्वधर्म-समभाव, आध्यात्मिक उन्नयन, विश्व-बंधुत्व।

प्रस्तावना

एक विचारधारा के रूप में नव-मानवतावाद दृष्टिकोण में मानव को संपूर्ण व्यवस्था का केंद्रीय तत्व माना जाता है और व्यक्ति की स्वतंत्रता और स्वायत्तता महत्वपूर्ण होती है। सभी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और अन्य संस्थाओं का मूल आधार मानव है और प्रत्येक बात का मापदंड भी मानव है। आचार्य महाप्रज्ञ के दृष्टिकोण में मानव जीवन की आध्यात्मिक उत्थान व उन्नयन पर बल देना रहा है। उन्होंने मानव जीवन की सांसारिक प्रवृत्तियों के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नयन को सर्वोपरि माना है, उनके अनुसार धर्म जाति संप्रदाय और क्षेत्रीयता से ऊपर सभी का लक्ष्य है, मानव मात्र की सेवा करना। मानवीय कल्याण और मानवीय सेवा सभी का मुख्य प्रयोजन होना चाहिए, यही दृष्टिकोण आचार्य महाप्रज्ञ का नव-मानवतावादी दृष्टिकोण है। उनके द्वारा दिए गए अध्यात्मिक संदेश एवं रचित साहित्य में उल्लेखित विचारों के आधार पर नव मानवतावादी चिंतन का विश्लेषण करना समीचीन है।

नव मानवतावाद एक दर्शन तथा विचारधारा है, इसमें मानव को अंतिम साध्य माना जाता है। व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा उसके महत्व को सर्वोच्च माना जाता है। यह विचारधारा व्यक्ति के विकास में विश्वास रखती है। मानवतावाद का संबंध केवल मानव जाति से है और मानव के साथ बिना किसी भेदभाव के सब के साथ एक समान व्यवहार होना है। समय तथा परिस्थितियों के अनुकूल विभिन्न मानव संगठनों, अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संस्थाओं ने मानवतावाद को बढ़ावा देने का भरसक प्रयत्न किया है। प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक चिंतनकर्ताओं व दार्शनिकों ने भी मानवतावाद को अपने चिंतन एवं दर्शन में स्थान प्रदान किया है। भारतीय चिंतकों ने भी इसको अपने दर्शन का आधार माना है, क्योंकि संपूर्ण सृष्टि में मानव ही वह केंद्रीय तत्व है जिसको आधार मानकर समाज, शासन-सता एवं विभिन्न संगठन अपने उद्देश्यों एवं लक्ष्य का निर्धारण करते है। भारतीय संस्कृति में भी मानव प्राणी को सबसे विवेकशील माना गया है और उसकी विवेकशीलता मानवतावाद का ही स्वरूप मानी जाती है। जैन धर्म में महावीर स्वामी ने भी मानवतावादी दृष्टिकोण रखते हुए मानव-हित, नैतिकता और मानवीय मूल्यों में सामंजस्य स्थापित करने पर बल दिया। उनकी धारणा थी की मनुष्य का मुख्य प्रयोजन स्वयं को पहचानना है और शुभ कर्मों से स्वयं की मुक्ति करनी है। यह लक्ष्य मानव कल्याण, अहिंसा एवं नैतिकता की भावना रखने से ही संभव हो सकता है। महावीर स्वामी के इस दृष्टिकोण का आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन एवं विचारों में भी प्रभाव देखा जा सकता है। उन्होंने भी अहिंसा, सदाचार, नैतिकता, कर्तव्य-निष्ठा आदि को अपने दर्शन में स्थान प्रदान किया और मानव मात्र के कल्याण को संपूर्ण व्यवस्थाओं का लक्ष्य बतलाया। उनके चिंतन एवं कृतित्व में हमें मानवतावादी दृष्टिकोण नजर आता है। योग, ध्यान एवं चरित्र निर्माण को आधार मानकर मानव कल्याण एवं उत्थान इनके दृष्टिकोण का लक्ष्य रहा है।

नव मानवतावादी पहलू

- मानव संसार में सर्वश्रेष्ठ और विवेकशील प्राणी है।
- संपूर्ण व्यवस्था का केंद्र बिंदु मानव है।
- मानव का आध्यात्मिक एवं भौतिक कल्याण करना संपूर्ण व्यवस्थाओं का प्रयोजन है।
- अहिंसा का उद्देश्य मनुष्य का आध्यात्मिक उन्नयन करना है।
- अहिंसा की नीति मनुष्य के कल्याण का सहज उपकरण है।
- नैतिकता मानव स्वभाव का सहज लक्षण है। नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देकर मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है।
- विश्व-बंधुत्व की भावना नव-मानवतावाद को बढ़ावा देने में सहायक है।

अहिंसा एवं नव-मानवतावाद -

अहिंसा की नीति अपनाकर न केवल व्यक्ति अपना आध्यात्मिक कल्याण कर सकता है, बल्कि सांसारिक जीवन को सफल एवं सहज बना सकता है। यदि सभी व्यक्ति अहिंसक व्यवहार एवं विचार रखने लगेंगे तो सांसारिक जीवन की अधिकांश जटिल समस्याओं का आसानी से

हल हो जाएगा जिससे प्रत्येक मानव का जीवन सुरक्षित एवं आनंदयुक्त हो जाएगा। इस प्रकार अहिंसा की नीति भी मानवतावादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में सहायक मानी जाती है। यह नीति ऐसा माध्यम है, जिससे शांतिपूर्ण और आपसी सहमति से जटिल से जटिल समस्या का निराकरण हो सकता है। अहिंसा की नीति न केवल मानव और समाज में अपितु राजनीतिक व्यवस्था में सुधार हेतु भी महत्वपूर्ण आधार मानी जा सकती है। यह नीति मानव कल्याण, मानव विकास और समाज उत्थान हेतु सहायक है। आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने विचारों में यह बतलाया कि, कुछ देशों में आतंकवाद का प्रशिक्षण भी दिया जाता है, यदि उसके स्थान पर अहिंसा की ट्रेनिंग दी जाए तो अधिकांश समस्याओं का समाधान आसानी से हो सकता है। हिंसा के लिए हमें हथियारों का निर्माण करना पड़ता है, प्रशिक्षण देना पड़ता है लेकिन यदि हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने और समस्याओं के निराकरण हेतु यदि अहिंसा की नीति को अपनाएंगे तो न कोई हथियारों के निर्माण की आवश्यकता होगी और ना ही धन की बर्बादी होगी। सभी का यदि ध्यान अहिंसा की ओर आकर्षित होगा तो समाज एवं राष्ट्रों के मध्य जो समस्याएं हैं वह समाप्त होती चली जाएंगी और मानव मानव से प्रेम करने लगेगा। प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग व सहअस्तित्व की नीति को बढ़ावा मिलेगा। अहिंसा की नीति अपनाकर मानवतावाद को बढ़ावा दिया जा सकता है। अहिंसा एक ऐसा हथियार है, जिससे दूसरे को बाध्य नहीं कर अपितु उसे सहर्ष सहमति पूर्वक अपने पक्ष में किया जा सकता है और उसके विचारों में बदलाव लाया जा सकता है। यह स्वरूप स्थापित होने पर स्वतः ही मानवतावाद की भावना उत्पन्न होगी और मानव के कल्याण के मार्ग प्रशस्त होंगे। वर्तमान आणविक युग में भी राष्ट्रों के विवादों के निराकरण में अहिंसा की नीति और नैतिक मूल्यों का प्रसार सबसे बड़ा प्रभावी उपाय हो सकता है। न केवल व्यक्तिगत अपितु सामाजिक,राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विवादों के निराकरण में भी आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन को अपना लिया जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी इससे मानवतावाद को बढ़ावा मिल सकता है।आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन मानवतावादी, नैतिकतावादी और समन्वयवादी माना जा सकता है।

सर्वधर्म-समभाव एवं नव-मानवतावाद

आचार्य महाप्रज्ञ की धारणा थी कि सर्वधर्म-समभाव की भावना मानव कल्याण, समाज विकास और राष्ट्र उत्थान का सर्वोपरि आयाम है। आज विश्व शांति बनाए रखने के अनेक प्रयास एवं चर्चाएं होती रहती है। सृष्टि पर परमाणु शस्त्रों का खतरा मंडरा रहा है, यह मनुष्य जाति के लिए सबसे बड़ा खतरा है। विश्वशांति आपसी समन्वय एवं सदभावना रखने से ही स्थापित की जा सकती है। हमें सह-अस्तित्व एवं सर्वधर्म-समभाव की नीति को अपनाना होगा तथा इसके साथ-साथ शक्ति संतुलन को भी बढ़ावा देना होगा।हमें उन आदतों का परित्याग करना होगा जो कि स्वार्थ की भावना को बढ़ावा देती है। व्यक्ति,समाज और राष्ट्र अपने हक के साथ दायित्व को भी पहचानेंगे तभी विश्वकल्याण होगा, समस्याओं का निराकरण होगा और मानवतावाद की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी। इस हेतु हमें निरपेक्षता के भाव को अपनाना होगा,असहयोग के स्थान पर सहयोग, स्वार्थ के स्थान पर त्याग को बढ़ावा देना होगा। यही आधार मानवतावाद के परिचायक माने जा सकते हैं। विश्व शांति का आधार सहिष्णुता, सह-अस्तित्व, त्याग और कर्तव्य निष्ठा की भावना हो सकती है। मनुष्य में मानसिकता एवं दृष्टिकोण के बदलाव की आवश्यकता है। जगत में दृष्टिकोण,विचारधारा तथा मानसिकता ही दिशा निर्धारित करती है। दायित्व-बोध, चेतना और भावना ही विचार क्रियान्विति का आधार है। स्वभाव तथा भावना हमेशा सकारात्मक होनी आवश्यक है। उन्होंने सभी धर्म में सद्भाव,सह-अस्तित्व तथा सम्मान की भावना को बढ़ावा देने पर बल दिया और विचार दिया कि नैतिकता की भावना बाहर से आरोपित ने होकर मानव स्वभाव का सहज लक्षण होना चाहिए। नैतिकता और मानवीय मूल्य जब मानव आचरण और व्यवहार के सहज लक्षण बन जाते हैं तो मनुष्य सहज रूप से संयमित एवं अहिंसक बनने लगता है और यह स्वभाव मानव मानव के प्रति प्रतिस्पर्धा के स्थान पर प्रेम की भावना बढ़ाता है। इस भावना से न केवल मानवतावाद को बढ़ावा मिलेगा बल्कि मानव जीवन

का आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त होगा। यही प्रत्येक मानव जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। समाज के इस स्वरूप की स्थापना से नव-मानवतावाद को बढ़ावा मिलेगा।

निष्कर्ष

शासन सत्ता का लक्ष्य मानव कल्याण होना चाहिए और अहिंसा की नीति मानव कल्याण एवं उत्थान का सहज उपाय है। अतः नैतिक मूल्यों को समाज में बढ़ावा देकर नव-मानवतावाद बढ़ाया जा सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन बहु आयामी रहा है जिसमें व्यक्तिगत, मानसिक, सामाजिक,राजनीतिक, आर्थिक तथा अंतरराष्ट्रीय समस्याओं के निराकरण का प्रयास किया गया है। इस हेतु नैतिक मूल्यों,अहिंसा तथा मानवतावादी दृष्टिकोण को मुख्य उपाय के रूप में माना गया है। उनके अनुरूप सहिष्णुता एवं सर्वधर्म सद्भाव मानव कल्याण हेतु सहायक है। राज्य का अंतिम प्रयोजन मानव कल्याण है। आचार्य महाप्रज्ञ के दृष्टिकोण का आधार मानव जीवन की आध्यात्मिक, नैतिक, और बौद्धिक उन्नयन को बढ़ाना है। उनका चिंतन न केवल प्रांत, क्षेत्र अथवा राष्ट्र तक सीमित है अपितु विश्वव्यापी है। उन्होंने शासक से अपेक्षा की कि नैतिक और अहिंसक तरीकों को अपनाकर प्रजा हित किया जा सकता है। वर्तमान विश्व व्यवस्था में नव मानवतावादी दृष्टिकोण मानव विकास एवं मानव कल्याण का महत्वपूर्ण आयाम है इसकी प्राप्ति हेतु आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन एवं दृष्टिकोण को आधार माना जा सकता है। उनका चिंतन न केवल भौतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन का आधार है बल्कि सृष्टि कल्याण एवं सृष्टि संरक्षण हेतु अति आवश्यक माना जा सकता है। वर्तमान में भी उनके द्वारा बतलाए गए सहज उपायों एवं नीतियों को अपनाकर कोई भी शासक शासन सत्ता एवं राज्य के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है और मानव कल्याण कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आचार्य महाप्रज्ञ,(1999) 'एकला चलो रे', आदर्श साहित्य संघ, चूरु, (राजस्थान)
2. आचार्य महाप्रज्ञ (1997) 'अपना दर्पण : अपना बिंब', जैन विश्व भारती, लाडनूं, नागौर (राजस्थान)
3. आचार्य महाप्रज्ञ (1996) 'लोकतंत्र : नया व्यक्ति नया समाज', जैन विश्व भारती, लाडनूं ,नागौर (राजस्थान)
4. आचार्य महाप्रज्ञ (2001) 'अनुव्रत की दार्शनिक पृष्ठभूमि' आदर्श साहित्य संघ, चूरू, (राजस्थान)
5. आचार्य महाप्रज्ञ (1998) 'अहिंसा के अछूते पहलू', जैन विश्व भारती, लाडनूं, नागौर (राजस्थान)
6. डी.आर. जाटव (1997) 'सामाजिक एवं मानवतावादी विचारक', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर (राजस्थान)
7. मानवेंद्रनाथ राय(1947) न्यू ह्यूमैनिज्म-ए मेनिफेस्टो

सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान)
आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं - 341306 (राजस्थान)